Chapter-6

अध्याय : ६

"हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनावैज्ञानिक काम-कुंठाओं का निरूपण।"

६:००:०० प्रास्ताविक :

जब कोई कार्य सहज, साधारण रुपसे संपन्न होता है, तो उसे एक साधारण स्थिति कहा जाएगा। किन्तु वह उस तरह से नहीं होता, कोई कृत्रिम आरोपित या असाधारण ढंगसे होता है तब उसे कुंठा कहा जाता है। जब कोई कुंठा किसी व्यक्ति में अधिक समय तक ठहर जाती हैं तो एसे व्यक्ति को कुंठित कहा जाता है। कुंठित व्यक्तिका व्यवहार (behavior) साधारण नहीं रहता। उसका व्यवहार कुछ असाधारण (abnormal) किस्मका हो जाता है। पूर्ववर्ती पृष्ठोंमें यह साबित किया गया है कि ये कुंठाएँ भी कई तरहकी होती हैं। कुछ लोगों को अपने जाति-या वंश को लेकर, कुलीनता को लेकर या नीच जाती का होने के कारण कुंठा रहती है। इसे हम जातिगत कुंठा कह सकते हैं। अमृतलाल नागर के उपन्यास 'नाच्यौ बहुत गोपाल' की नायिका

निर्गुण उच्च जाति की है, किन्तु वह एक भंगी जाति के युवान के साथ भाग जाती है । उस युवान का नाम मोहना है । उच्च जाति के लोगों के डर के मारे मोहना उसे अपनी मामी के यहाँ ले जाता है। मामी मोहना को तो चाहती है पर निर्गुण से धृणा करती है । वह सोचती है कि मोहना के जीवनमें जो मुसीबत आयी है उसके पीछे यह 'रांड' है । मामी को निर्गुण से नफ़रत इसलिए भी है कि वह अधिक रुपये अपने साथ नहीं लाई । वह निर्गुण को कहती है - "तुझे मेरी ही इज्जत पर डाका डालने का सुझा था । रंडी, छिनाल कहीं की । तेरी जवानी में आग लग जाएँ । कलमुहीं लेके आई तो पाँचसो रुपैयाँ । तेरे . . . में कीड़े पड़े । आखिर मेरा ही लड़का तुझे फंसाने को मिला है ।"[१] मोहना की मामी निर्गुण से वे सब काम करवाती है जिन से निर्गुण को चीढ़ है । वह उसे मामू की चिलम भरने के लिए कहती है । एक दिन तो हद कर देती है । जब घर के सब मरद चले गये तो मामीने कुंडा बन्द कर लिया और निर्लज्जता के साथ मोरी पर हगने बैठ गई फिर निर्गुनिया को ऑर्डर दिया कि इसे कमाकर टोकरे में डाल । निर्गुण का सिर चकरा गया ।[२] इन लोगों की भाषामें कमाना झाडू आदि से टट्टी को एकत्र करने को कहते हैं । भंगी जाति के लोग संडास, जाजरू साफ करने का काम करते हैं । लोगोंकी टट्टी टोकरे में डालकर फैंकने का काम करते हैं । यहां पर मोहना की मामी निर्गुण से यह सब करवाती है । यदि मामीमें कोई कुंठा नहीं होती तो उसका व्यवहार ऐसा न होता, परन्तु मामी में जातिगत कुंठा है । इस जातिगत कुंठा के कारण मामी निर्गुण के साथ अमानवीय व्यवहार करती है । जातिगत कुंठा अधिकांशतः निम्न जाति के लोगों में होती है ।

जातिगत कुंठा की तरह अर्थगत कुंठा भी होती है । गरीब और विपन्न लोगों में यह कुंठा होती है, मध्यवर्गीय लोगों में भी यह कुंठा पायी जाती है । इस अर्थगत या आर्थिक कुंठा के कारण ये लोग कई बार झूठे दिखावे के

खातिर अपनी हैसियत से बढ़-चढ़ कर खर्च करते हैं । प्रेमचन्द के उपन्यास 'गबन' में उसके नायक रमानाथ का जो परिवार है उन लोगों में यह कुंठा पायी जाती है । पहले तो दिखावे में आकर खूब खर्च कर लेते हैं और बादमें लेनदारों के तगादों से बचने के लिए बहू के गहने चुरवा देते हैं ।

आजकल एक दूसरे प्रकारकी कुंठा भी दृष्टिगत हो रही है । हमारे यहाँ के लोगों में प्रायः अपने देश को लेकर एक प्रकार की कुंठा पायी जाती है । विदेशों से, विदेशी बातों से, विदेशी भाषासे, विदेश में रहने वाले अपने स्नेही संबधियों से वे भयंकर रुपसे अभिभूत होते हैं । उनके निकट स्वयं को वे बहुत छोटा महसूस करते हैं । उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'रुकोगी नहीं राधिका ?' में राधिका की भाभी राधिकाकी बहुत इज्जत करती है । राधिका एक विदेशी के साथ भाग कई थी । बाद में उसको छोड़कर लौट आयी । राधिका एक आधुनिक खयोलों वाली लड़की है । उसके अनेक पुरुष मित्र हैं । अन्य स्थितियों में ऐसी ननद के प्रति भाभी का व्यवहार कुछ अलग प्रकार का होता किन्तु यहाँ पर राधिका की भाभी उसे बहुत चाहती है, इज्जत देती है, उसकी हर सुविधा का ध्यान रखती है, कारण केवल इतना है कि फोरेन रिटन ननद के कारण उसका अपने वर्ग की अन्य स्त्रियों में रुआब पडता है । राधिका को लेकर जब वह सभा सम्मेलनों में जाती है तो उसकी छाती गर्व से फूली रहती है । इस मनोवृत्ति के पीछे वह कुंठा काम कर रही है, जिसमें विदेश के कुत्तों को भी प्यार करने लगते हैं ।

उपर्युक्त नाना प्रकार की कुंठाओं की तरह जब कोई कुंठा काम-भावना (sex) से जुड़ी हुई होती है तो हम उसे काम-कुंठा कहते हैं । स्त्री-पुरुष के बीच, पति-पत्नी के बीच एक स्वाभाविक कामजन्य आकर्षण भी होता है और उनमें जातीय सम्बन्ध (sexual relationship) भी होती है । परन्तु यह

सब एक साधारण (Normal) मनोवृत्ति के तहत होता है तो उसे कुंठा नहीं कहा जा सकता । किन्तु यदि कामगत सम्बन्धों में स्त्री या पुरुष में, पति या पत्नी में कुछ असाधारणता (abnormality) दृष्टिगत होती है तब उसे काम-कुंठा कह सकते हैं । इसका अर्थ यह कतई नहीं कि काम कुंठा स्त्री पुरुष, पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका या नर-नारी के सम्वन्धों में ही होती है, यह अलग से किसी एक व्यक्तिमें, स्त्री या पुरुषमें भी हो सकती है । संक्षेपमें काम-भावना (sex) से जुड़ी हुई किसी भी कुंठा को भी हम काम कुंठा की संज्ञा दे सकते हैं । प्रस्तुत अध्याय में मनो वैज्ञानिक उपन्यासों के पात्रोंमें पायी जाने वाली काम-कुंठाओं को विश्लेषित करने का हमारा उपक्रम रहेगा।

६:०१:००

उपर्युक्त विवेचन में जिन कामकुंठाओं का उल्लेख किया गया है वे कामकुंठाएँ विभिन्न अवस्थाओं के स्त्री-पुरुष में पायी जाती हैं । अवस्था भेद के अनुसार हम इसे निम्न लिखित ढंग से विश्लेषित कर सकते हैं । (क) किशोर तथा युवावस्था के स्त्री-पुरुषो में, (ख) प्रौढ़ अथवा वृद्धावस्था के स्त्री-पुरुषो में तथा (ग) शिशु अवस्था के बाल-बालिकाओं में । अब क्रमशः इनको विश्लेषित करने का हमारा उपक्रम रहेगा ।

६:०१:०१ किशोर तथा युवावस्था के स्त्री-पुरुषों में :

किशोर तथा युववस्था के स्त्री-पुरुषों में कामकुंठाएँ तब पायी जाती हैं जब किन्हीं कारणों से उनकी स्वाभाविक या नैसर्गिक काम-वासना परितुष्ट नहीं होती । किशोर अवस्थामें काम-कुंठाओं के विकसित होने का एक कारण खराब संगत या कामशास्त्र की बाजारू पुस्तकों का पठन-पाठन भी हो सकता है । गुलशेरखान शानी कृत 'कालाजल' उपन्यास में उपन्यास का नायक बब्बन

की फुफेरी बहन सलमा में, जिसे बब्बन सलमा आपा कहता है, इस काम कुंठा से खराब परिणामों को रेखांकित किया गया है । सलमा आपा की अवस्था वयः संधिवाली अवस्था है । इस उम्रमें प्रायः किशोर लड़के-लड़कियाँ के गुमराह होने के अनेकानेक उदाहरण समाज में मिलते हैं । बब्बन अपने पिता के बक्से से गंदी, बाजारू, अश्लील किताबें चुराकर सलमा आपा को देता है । फलतः किशोर अवस्थामें ही सलमा आपा कुंठित हो जाती है और इस कुंठित अवस्था में उसके कदम गलत राहों पर चल पड़ते हैं । इसका परिणाम यह निकलता है कि एक रात शंकास्पद स्थितियोंमें सलमा आपा की सहस्यमय ढंगसे मृत्यु हो जाती है । कदाचित सलमा आपा को भी 'धरती धन न अपना' की ज्ञानो की भाँति जहर दे दिया होगा ।[३]

६:०१:०२

हृदयेश कृत 'एक कहानी अंतहीन' की नायिका की सगाई बार-बार टूट जाती है । यदि वह पढ़ाई या दूसरी प्रवृत्तियों में व्यस्त होती तो उसका मन स्वस्थ रह सकता था । परन्तु वह जिस परिवेश में रहती है । उस परिवेश में लड़कियाँ असमय ही वयस्क हो जाती है । दूसरे उसने अपने माता-पिता को एक रात नग्न अवस्थामें संभोगरत स्थितिमें देख लिया था । उस दिन से उसे इस बात का चस्का-सा लग जाता है । मौका मिलने पर वह उनको देखती है, इतना ही नहीं उनके बीच होनेवाली गंदी अश्लील बातों को भी सुनती है । ऐसी स्थितियों में यदि उसका विवाह संपन्न हो जाता तो उसके काम विकारों को कोई राह मिल जाती । परन्तु ऐसा होता नहीं है । उसकी सगाई बार-बार टूट जाती है । अतः उसमें काम-कुंठा विकसित होती है । वह अपने घर की खिड़की के पास खड़ी रहती है और आते जाते लड़कों को लेकर मानसिक दिवास्वप्नो में खो जाती है। जब कोई भी लड़का उसकी नज़रों से गुजरता है

वह उसके काथ अपने काल्पनिक जिस्मानी रिश्तों को जोड़ देती है । इसी काम-कुंठा के कारण ही वह अपने छोटे भाई को स्नान कराते समय उसकी फुन्नी को बार-बार छूती है ।

६:०१:०३

डॉ. शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास 'अलग अलग वैतरणी' में हमें पटनहिया भाभी में यह कामकुंठा मिलती है । पटनहिया भाभी का मूल नाम दीपा है । वह एक शिक्षित एवं संस्कारी लड़की है । परन्तु उसका विवाह होता है कल्पूसे जो कुसंग की वैतरणी का शिकार है । गोपाल और कल्पू बचपन से ही खराब सौबत में पड़ जाते हैं । इस खराब सौबत के कारण कल्पू तन मन का रोगी हो जाता है । उसकी स्थिति लगभग नपुंसक जैसी हो जाती है । दीपा अर्थात् पटनहिया भाभी इसी के गले मढ़ दी गई है । अतः उसकी जिन्दगी एक तड़प बनकर रह जाती है । अभुक्त कामवासना की कसक उसे कचोटती रहती है । इस कामकुंठा के कारण एकांत में बच्चों को नंगा करके वह देखती रहती है ।

६:०:०४

हृदयेश कृत 'एक कहानी अंतहीन' का नायक शादीसुदा है । वह शहरमें रहता है । उसकी पत्नी कई महीनों के लिए मायके गई हुई है । अतः वह बाजारू पुस्तको को पढ़ता रहता है । वह एक बार ब्ल्यू फिल्म को भी देख लेता है । फलतः उसमें कामजनित कुंठा का निर्माण होता है । समय व्यतीत करने के लिए वह दोस्तों के साथ तास भी खेलता है । एक रात वह बहुत देर तक दोस्तों के साथ तास खेलता है किन्तु उनके चले जाने के बाद वह नितांत अकेला पड़ जाता है । ऐसी स्थिति में उसकी काम-कुंठा भड़क उठती है और वह पलंग से गद्दों को हटाकर पलंग की निवाड़ों की सहायता से मैथुन करता

है । इसे हस्त-मैथुन का ही प्रकार कह सकते हैं । स्खलन के उपरांत कामावेग के शांत हो जाने पर उसे बहुत पछतावा होता है । और भविष्यमें सावधान रहने का संकल्प भी करता है किन्तु कुछ दिनों के अंतराल से उसकी कामकुंठा उछाल मारती है और वह वही सब करता है, जिसको नहीं करने के वह कई बार संकल्प ले चुका है ।

६:०१:०५

मणि मधुकर द्वारा प्रणीत 'सफेद मेमने' का डॉ. भानमल मवेशियों का डॉक्टर है । वह राजस्थान के बाड़मेर जिले की एक ढाणी में ढोरों के डॉक्टर का कार्य कर रहा है । गाँव में पढ़े-लिखे के नाम पर एक पोस्ट-मास्टर है, एक डाकिया है और तीसरा डॉक्टर भानमल खुद है । वह एक भगोड़ा पात्र है । अपने एक मित्र की सहायता से बैंकमें गबन करके भाग आया था । सरकार और पुलीसकी नजर से बचने के लिए वह बाडमेर के रेगिस्तानों की खाक छानता है । उपन्यास में ऐसे संकेत मिलते हैं कि उसने अपनी पत्नी मीरा की हत्या की थी । अपनी एकाकिता तथा यांत्रिक जड़, ऊबाउ मोनोटोनस जिंदगी से वह थक जाता है । अपनी इस मानसिक थकान को मिटाने के लिए कभी-कभी वह जस्सू डाकिया तथा रामावतार के आगे दार्शनिक किसम की बातें करता रहता है । परन्तु समग्रतया देखा जाए तो डॉ. भानमल का व्यक्तित्व निराशा के अंधकारमें डूबे हुए एक कुंठित व्यक्ति का है । दमित काम वासना के कारण ही उसमें काम-जनित कुंठाएँ उत्पन्न होती हैं । अपनी काम-वासना की निवृत्ति का कोई मार्ग न पाकर वह पशु मैथुन (Breastiality) का आक्षय ग्रहण करता है । वह ढोरों का डॉक्टर है । अतः भेंस के साथ मैथुन करते हुए उसे बताया है ।[४]

६:०१:०६

हिमांशु श्रीवास्तव द्वारा प्रणीत उपन्यास 'नदी फिर बह चली' का नायक जगलाल भी कामजनित कुंठाओंसे पीड़ित है । पटना में वह ट्रक चलाने का काम करता है । ट्रक ड्राईवर होने के कारण उसकी दोस्ती ट्रक ड्राईवरों और क्लीनरों से होती है । ऐसी सोबत के कारण वह स्त्रियों की नंगी तसवीरे ले आता है । जब उसकी शादी दो जाती है तब कुछ समय के लिए अपनी उन काम-कुंठाओं से मुक्ति मिलती है । उसकी पत्नी परबतिया अशिक्षित किन्तु संस्कारी है । थोड़े समय तक तो जगलाल पत्नी के प्रेममें डूब जाता है और तमाम बुरी आदतों को छोड़ देता है । परन्तु उसका माहौल तो वही ट्रक ड्राईवरों वाला है । अतः कुछ दिनों के बाद पुरानी वृत्ति जोर पकड़ती है । बुरी सोबत के कारण वह देशी दारू तथा ठर्रा पीता है और जब लम्बी टूर पर निकलता है तो दूसरे ट्रक ड्राईवरों की तरह वह भी सस्ती वेश्याओं के पास जाकर अपनी काम वासना तृप्त करता है । परिवेशजनित इस काम कुंठाके कारण जगलाल अपनी पत्नी से असंतुष्ट रहने लगता है । परबतिया शरम-लिहाज वाली संकोचशील स्वभाववाली स्त्री है । जगलाल को बाजारू सस्ती स्त्रीयों की आदत है । अपनी इन काम कुंठाओ के कारण जगलाल परबतिया से उसी प्रकार की अपेक्षा रखता है, उसको उस प्रकार का बेहयापन और बेशर्मी अच्छी लगती है । इस कामकुंठा का बड़ा बुरा परिणाम आता है । एक बार किसी वेश्या को लेकर उसका अपने अन्य साथी से झगड़ा हो जाता है और वह उसकी हत्या कर बैठता है । फलतः उसे सात साल की सजा हो जाती है । असहाय अवस्थामें परबतिया को पुनः गाँव लौटना पड़ता है । परबतिया की इस त्रासदी का मूल कारण तो जगलाल की वे वृत्तियाँ है जो कामकुंठाओं से उत्पन्न हुई हैं ।

६:०१:०७

गुलशेरखान शानी कृत उपन्यास 'कालाजल' में रोशनबेग नामक एक युवाचरित्र है । रोशनबेग बीदारोगीन का लड़का है । बीदारोगिन का मूल नाम तो बिट्टी रौताइन है । परन्तु बस्तरमें आकर बस गये दारोगा मिरजा से बिट्टी रौताइन को प्रेम हो जाता है और वह बिट्टी रौताइनसे बीदारोगिन हो जाती है । रोशनबेग के जन्म के बाद मिर्जा की मृत्यु जाती है तब बीदारोगिन अपने एक दूर के देवर रज्जूमियां से निकाह पढ़ लेती है । इस शादी का बडा बुरा प्रभाव रोशनबेग पर पड़ता है और उसका व्यक्तित्व सदा-सदा के लिए कुंठित हो जाता है । उसके सौतेले पिता रज्जू मियाँ का चरित्र अच्छा नहीं है । वह अपनी ही बहू पर डोरे डालता है । घर-परिवार के ऐसे गंदे वातावरण के कारण रोशनबेग अधिकांशतः एकांत का सेवन करता है । वह ज्यादातर चूप रहता है । इसकी इस चुप्पी को तोड़ने के लिए उसे होस्टेल भेज दिया जाता है । घर के गंदे माहौल से उसमें जो काम जनित कुंठाएँ विकसित हुई हैं होस्टेल में भेज दिए जाने पर वे कुंठाएँ बढती ही हैं और उसमें कामकुंठा के कारण हस्तमैथुन (Masterbution) की आदत पड़ जाती है ।

६:०१:०८

डो. राही मासूम रजा कृत 'आधागाँव' उपन्यासमें कामजनित कुंठाओं का अच्छाखासा चित्रण मिलता है । प्रस्तुत उपन्यास में कामजनित कुंठाके कारण उत्पन्न समलैंगिकता (homosexuality) के कई किस्से मिलते हैं । पुरुषोमें यह समलैंगिकता दो प्रकार की होती है । प्रथम प्रकार के अंतर्गत वे लोग आते हैं जो स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की पूर्ति हेतु समलैगिकता में प्रवेश करते हैं । इसमें दोनों पुरुष पारस्परिक इन्द्रियस्पर्श और रगड़ से सुख प्राप्त करते हैं । दूसरे प्रकार की समलैंगिकता नवाबी सभ्यता की देन है । नवाबी सभ्यता में कई

ऐसे नवाब होते थे जो अपने साथ खूबसूरत लडके रखते थे । उन लडकों के साथ गुदामार्गीय मैथुन (anal-coitos) किया जाता था । 'आधागाँव' उपन्यास में सलीमपुर का जमींदार नवाब अशर्रफउल्लाखां अपनी कोठीमें कई नमकीन लड़कों को रखता था ।[५] इसी उपन्यास में तक्कन चाचा कम्मो नामक लड़के को गोदाम में ले जाता है और उसके साथ गुदामार्गीय मैथुन करता है। गुदामार्गीय मैथुन को सृष्टि विरूद्ध का कार्य भी कहा जाता है । गाँव के कुछ लड़के तक्कन चाचा और कम्मो को देख लेते हैं । उसका बड़ा ही कुप्रभाव कम्मो के चरित्र पर पड़ता है । उसका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है और डॉक्टर हो जाने के बावजूद वह लोगों से आँख मिलाकर बात नहीं कर सकता है । डॉ. राही मासूम रज़ा के ही उपन्यास 'दिल एक सादा कागज़' में तो ऐसे कई काम-कुंठित चरित्र मिलते हैं । नारायण गंज स्कूल की पोलिटिक्स में इस प्रवृत्ति का भी बड़ा योगदान है ।

६:०१:०९

उपेन्द्रनाथ अश्क कृत उपन्यास 'शहरमें घूमता आईना' में ऐसे कई काम कुंठित चरित्र मिलते हैं । अतः डॉ. मक्खनलाल शर्मानि प्रस्तुत उपन्यास की आलोचना करते हुए लिखा है "जिस समाज का यहाँ चित्र दिया गया है, वह यौन भुक्खडों, दंभियों, कायरों, मिथ्याभिमानियों, पलायनवादियों, शोषकों, जनखों, पागलों, दिमागी अय्याशियों, धोखेबाजों, जादूगरो तथा अवसरवादियों का है । उनमें कोई भी तो ऐसा नहीं है जो परिस्थितिको उसकी यथास्थितिमें स्वीकार कर आगे बढे और संघर्ष का जोखम उठाएँ । यदि इसे समाजका एकांगी चित्र कहें तो आशा है, अनुचित न होगा ।"[६] प्रस्तुत उपन्यास का नायक चेतन भी कामकुंठाओंसे ग्रस्त है । उसमें भी समलैंगिकता की प्रवृत्ति पायी जाती है । परन्तु समाज के सेन्सर के कारण कई बार वह अपनी वृत्तियों को दबाता हैं ।[७]

६:०१:१०

रमेश बक्षी कृत 'बैसाखियों वाली इमारत' का अनाम नायक एक कुंठित व्यक्तित्व है । कुंठित होने के कारण उसका समूचा व्यक्तित्व 'anti-love' से निर्मित हुआ है । स्त्री-पुरुष संबंधो में वह केवल शारीरिक आवश्यकताओं को ही महत्व देता है । शरीर की भूख किसी भी तरह से यदि संतुष्ट होती है तो उसमें उसे किसी प्रकार की आपत्ति दृष्टिगत नहीं होती है । उसकी इस 'anti-love' थियरी के कारण वह प्रेम को 'जीभ पर उगा केन्सर' तथा 'बेहद गरम देशमें जमा गई आईस्क्रीम' समझता है ।[८] उसकी इस यौन कुंठा के कारण वैवाहिक जीवन की अपेक्षा वह किसी वेश्या से संबंध रखना ज्यादा अच्छा समझता है, जहाँ महीने पखवारे में गये मेहमान की तरह आराम की नींद सोएँ ।[९] इस कुंठा के कारण ही उपन्यास का अनाम नायक किसीको भी सही रुपमें चाह नहीं सकता । न पत्नी को, न प्रेमिका को और न उसकी फ्रेन्ड को । उसकी पत्नी जब उसका घर छोड़ने का निर्णय करती है तब उसे प्रसन्नता होती है । जाते-जाते भी वह उसे एक बार भोग लेना चाहता है । इस भोगने की इच्छा में उसकी पशुवृत्ति ही है । अपनी यौन कुंठा के कारण वह पत्नी और वेश्या के अंतर को भूल चुका है । अतः पत्नी के आगे वह प्यार मुहोब्बत का झूठा नाटक रचाता है । परन्तु उसकी पत्नी भी उसे भयंकर धृणा करती है । वह प्यार दुलार के स्थान पर नफरत भरी स्मृतियों को लेकर जाना चाहती है । अतः वह कहती है - "मैं जाते-जाते एक असंतुष्ट और जलती हुई रात को इस घर में छोड़ ही जाऊँगी और वैसी ही याद साथ में भी ले जाऊँगी ।"[१०] पत्नी के इस प्रकार के रुख के कारण नायक का अहम (ego) आहत होता है, फलतः वह उस पर बलात्कार करने की चेष्टा करता है। परन्तु उसकी पत्नी नाखून और दाँत के हथियारों से उसे परास्त कर देती है और उसके झूठे अहम को एक करारी चोट पहुँचाकर हमेशा के लिए चली जाती है । नायक की यह कुंठा इस

हद तक विकसित होती है कि स्त्री मात्र उसके लिए 'एक योनि' के अतिरिक्त कुछ नहीं रह जाती। नायक को दूसरा करारा तमाचा मिस वसुधा की ओर से मिलता है। वसुधा एक चित्रकार है। 'एबस्ट्रेक्ट' (abstract) प्रकारकी पैटिंग वह करती है। कॉलेज की कला प्रदर्शनी में नायक का उससे परिचय होता है। नायक अपने अखबारी कोलममें उसकी पैन्टिंग की भरपूर तारीफ़ करता है। वसुधा एक नवोदित कलाकार थी। अतः नायककी कलात्मक टिप्पणियों से उसे प्रसन्नता होती है। और वह उसके अधिक निकट आती है। परन्तु थोड़ी-सी निकटता के उपरान्त उसका असली चेहरा प्रकट होने लगता है। वह वसुधा से शारीरिक सहवास की माँग करता है। वसुधा उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखती है, तब विवाह संस्था के प्रति वह अपनी घृणा को प्रकट करता है। वसुधा से वह कहता है कि विवाह 'किसी बेवकूफ द्वारा बनाये गये संविधान पर स्वीकृति के हस्ताक्षर' के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। फलतः वसुधा भी उसे छोड़कर चली जाती है। प्रस्तुत उपन्यास में नायक की भाँति दूसरा कुंठित व्यक्तित्व है मिस जयस्वाल का। वह एक कॉलेजमें हिन्दी की प्रोफ़ेसर है। दोनों की मुलाकात ललितकला आकादमी में होती है। मिस जयस्वाल अपने को कुछ अधिक 'bold' समझती है। अपने चाहने वालों के सम्मुख पान-सोपारी की तरह अपना शरीर पेश करती है और उसीको वह अपनी 'boldness' समझती है। अविवाहित लोगों की अपेक्षा वह विवाहित पुरुषों को अधिक पसन्द करती है। एक स्थान पर वह कहती है - "ये कुंवारे लोग बड़े बकवास होते है और असल में होता है वह चोकलेट। वे ज्यादा कुंछ करेंगे तो नोंचखसोट लेंगे। मेरे मनमें उस सब के प्रति एक डिसलाईकिंग है। उनसे दोस्ती करने का मतलब है अपना वक्त जाया करना।"[११] वस्तुतः मिस जयस्वाल की भावना के पीछे उसकी saddiest मनोवृत्ति काम करती है। स्वयं अविवाहित होने के कारण विवाहित स्त्रियों के प्रति उसके मनमें एक सहज ईर्ष्या भाव है। अतः उनको घरभंग करने के लिए वह विवाहित पुरुषों से

सम्बन्ध स्थापित करती है। दूसरों के पारिवारिक जीवनमें आग लगाने से उसे एक प्रकार की संतुष्टि मिलती है । अतः मिस जयस्वाल का व्यक्तित्व भी कुंठित ही कहा जा सकता है । इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में उसका अनाम नायक और मिस जयस्वाल दोनों कुंठित व्यक्तित्व वाले चरित्र हैं । स्वभाव की समानता के कारण इन दोनों में घनिष्ठता बढ़नी चाहिए, परन्तु ऐसा नही होता क्योंकि नायक भले आधुनिकता का दंभ भरता हो परन्तु वह पूर्णतया अपने मध्ययुगीन और मध्यवर्गीय संस्कारों से मुक्त नहीं है । नई-नई स्त्री मित्रों से सम्बन्ध जोड़ना तो उसे अच्छा लगता है । परन्तु उसकी कोई स्त्री मित्र किसी अन्य पुरुष से सम्बन्ध बढावे इसे वह पसन्द नहीं करता । अतः एक दिन मिस जयस्वाल को भी अपने घर से निकाल देता है और मिस जयस्वाल भी उसे 'इमोशनल कुत्ते' की उपाधि देकर उसके जीवन से रूखसत हो जाती है । इससे यह फलित होता है कि कुंठित व्यक्तित्व वाले चरित्र सहज साधारण जीवन जीने वाले लोगों के जीवन में सदैव समस्याएँ पैदा करते हैं । उन्हें अकुंठित लोगों को पीड़ा देने में ही शायद आनंद आता है और इसलिए दो कुंठित लोगों में भी मित्रता या घनिष्ठता नहीं पनप सकती ।

६:०१:११

कमलेश्वर कृत 'तीसरा आदमी' विवाहित जीवन में, पति-पत्नी के अतिरिक्त तीसरे व्यक्ति के प्रवेश की त्रासदी को अभिव्यंजित करने वाला उपन्यास है । पति-पत्नी के मध्य तीसरे प्रेमी या प्रेमिका की स्थिति पर जैनेन्द्र अनेक उपन्यासो में लिख चुके हैं । परन्तु यहाँ पर कमलेश्वर ने तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति को एक दूसरे ढंग से दर्ज किया है । उपन्यास के नायक-नायिका नरेश और चित्रा इस तीसरे व्यक्ति की स्थिति को लेंकर चेतन-अचेतन के घात-प्रतिघात से टूट-बिखर जाते हैं । जैनेन्द्रके पात्रों में अचेतन भावनाएँ

अंतर्मुखी होकर अंततोगत्वा अस्वीकृत हो जाती हैं । परन्तु यहाँ पर अचेतन मन की वासनाएँ कुंठा को जन्म देती हैं । फ्रायड की धारणा है कि मनुष्य का अचेतन मन हमेशा सक्रिय रहता है । चेतन मन की दमित वासनाएँ अचेतन मनमें अपना स्थायी रूप बना लेती हैं । और अंततः यह दमित भावनाएँ कुंठा को जन्म देती हैं । कुंठित व्यक्ति प्रायः पलायन का आश्रय लेता है या विकृतियों का शिकार हो जाता है ।[१२] नरेश को अपने वैवाहिक जीवन के प्रारंभ में ही यह अनुभव होने लगता है कि सुमंत उनके वैवाहिक जीवन पर हावी होता जा रहा है । नरेश आकाशवाणी में कार्य करता है। दिल्ली जैसे महानगर में आवास की बड़ी समस्या रहती है । नरेश को विभागीय क्वार्टर अभी आबंटित नहीं हुआ है । उसकी आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नही है कि दिल्ली जैसे महानगरमें किसी अच्छे विस्तार में दो रूम किचन का मकान किराये पर वह ले सके । अतः सुमंत के साथ एक ही कमरें में रहने के लिए वह विवश हो जाता है । दोनों की नौकरी के समय अलग-अलग हैं, दूसरे नरेश को कई बार कई-कई दिनों के लिए टूर पर जाना पड़ता है ऐसी स्थिति में सुमंत और चित्रा को लेकर वह अनेक शंका-कुशंका करता रहता है । सुमंत को देखकर नरेश को ऐसा लगता है कि मानों सुमंत की छाया हर समय उसके आगे-आगे चलती है । नरेश की इस कुंठा का चित्रण लेखक ने बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंगसे किया है - ''और लगता है कि मैं उस छाया का सिर्फ पीछा करता हूँ । जो वह कहती है, वही मैं करता जाता हूँ । मुझसे पहले वह घरमें दाखिल होती है । मुझसे पहले वह चित्रा को देखती है - जो कुछ मैं करना चाहता हूँ उससे पहले वह छाया वही सब कर लेती है ।''[१३]

एक दिन नरेश चित्रा को सुमंत के साथ रात्रि के समय बाहर टहलते हुए देख लेता है। इसके कारण उसके अचेतन मनमें द्वन्द्ध शुरु हो जाता है । ऐसी स्थितिमें चित्रा के साथ क्या किया जाए ? यह उसकी समझमें नहीं

आता । उस समय का चित्रण भी बड़ा ही मनोवैज्ञानिक बन पड़ा है। वह सोचता है . . . ''या तो हिंस पशु की तरह मैं चित्रा के साथ पेश आऊँ, उसकी चमड़ी उधेड़ दूँ या फिर चुपचाप उसकी जिन्दगी से निकल जाऊं । तीसरा रास्ता तो कोई था नहीं । यही दो अधिकार है पति के पास या तो वह गँवारो की तरह पेश आएं और जानवर की तरह सबकुछ स्वीकार ले और इस टूटी हुई जिन्दगी की हर तकलीफ ले ले या आदमी की तरह अपनी हार मानकर चुपचाप रास्ते से हट जाए ।''[१४] इस प्रकार यहाँ चित्रा और सुमंत के संबंधों को लेकर नरेश की कुंठाओं का चित्रण उपलब्ध होता है ।

६:०१:०१२

इलाचन्द्र के उपन्यास 'मुक्तिपथ' की सुनंदा में कामेच्छा एक कुंठा का रुप धारण कर लेती है । इस उपन्यास की नायिका सुनंदा विधवा है । उसकी अचेतन में दबी हुई कामेच्छा अपनी तृप्ति चाहती है । और जब तृप्ति नहीं होती उसका अंतर्मन विद्रोह कर उठता है । दमित वासनाओं से उत्पन्न कुंठाओं के कारण वह भाग जाने को उद्यत होती है । अपनी एक सहेली रमिला से वह कहती है - ''तुमसे क्या छिपाऊँ रानी, अवश्य ही इतने दिनों तक मेरे मनमें कहीं-न-कहीं ये इच्छा दबी हुई थी कि मेरे भीतर के जलते हुए रेगिस्तानमें जहाँ चिनगारियों की तरह उड़ते हुए बालू की कनों के सिवाय कुछ नहीं है वहाँ कहीं एक कोने में अगर तनिक हरियाली छा जाती, तब शायद जीवन कुछ दूसरे ही रूपमें सामने आता । . . . पानी की बूंद भी कहीं नहीं है, हरियाली की कौन कहे ।''[१५]

६:०१:१३

नागार्जुन द्वारा प्रणीत उपन्यास 'इमरतिया' में जमनिया मठ का निरुपण मिलता है। यद्यपि जमनिया मठ एक धार्मिक-सांप्रदायिक मठ है, तथापि उसमें

कईं प्रकार के यौन-भ्रष्टाचार चलते हैं । मठमें कुछ सधुआइनों को रखा गया है। जिनका काम उच्चवर्गीय अधिकारियों तथा विशिष्ट राजनीतिक अतिथियों की यौनइच्छा को संतृप्त करना होता था ; ताकि जमनिया मठ के बाबा तथा जमनिया मठ से जुड़े हुए लोग उन अधिकारियों तथा राजनेताओं से मनोवांछित कार्य करवा सके । इन सधुआइनो में हमें कई प्रकार की कामकुंठाएँ मिलती हैं, क्योंकि बाह्यतः उन पर कई प्रकार की पाबन्धियाँ होती हैं । ये सधुआइने है, अतः समाज के सम्मुख उनकी छवि वैरागिनियों-सी होती है । वे पवित्र और ब्रह्मचारिणियाँ मानी जाती हैं । अपनी यौनेच्छा को तृप्त करने का उनके पास सहज-वैध-प्राकृतिक तरीका नहीं होता है । फलतः ये सधुआइनें अतिकामवासना की कुंठासे पीड़ित होती हैं । गौरी उसी प्रकार की एक साधुआइन है । मठमें खाने-पीने की चीजों में किसी प्रकार की कमी नहीं होती है और किसी प्रकार का श्रम भी उनको करना नहीं पड़ता । समाज के लोगों के लिए वे पूज्या और आदरणीया होती हैं । संक्षेप में उनकी जीवनशैली विलासी प्रकार की होती है । ऐसी अवस्थामें कामवासनाका बढ़ जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं । गौरी में ये कामवासना का प्रमाण बहुत बढ़ा-चढ़ा है। उसे हम 'Nympho' प्रकार की स्त्री कह सकते हैं । एक पुरुष से उसकी संतृप्ति नहीं होती। सालमें कई-कई मर्दों को वह बदलती है । एक स्थान पर वह अपनी एक साथिन से कहती है कि वह गर्माये हुए घोडे को भी शांत करने की कुवत रखती है ।[१६] उपन्यासमें एक प्रसंग आया है जिसमें जीवित बच्चे की बलि को लेकर पुलिस-केस होता है, तब उस केस के पेपर्स को रफे-दफे करने के लिए इसी गौरी को भरतपुरा के थानेदार के याहाँ भेजी जाती है । गौरी वहाँ चार दिन रहती है और एफ. आई. आर. के पेपर्स बदलवा देती है । पुलीस रेकोर्ड में दर्ज करवाया जाता है - ''पूजा की आठवीं रात में जाने किधर से एक पगली आयी । उसकी गोद में छः महीने का बच्चा था । पुजारी की नजर बचाकर उसने बच्चे को हवन-कुंडमें डाल दिया । सरकार बहादुर से अर्ज है कि वह जमनिया मठके संतशिरोमणी

बाबाजी महराज की प्रतिष्ठा और इज्जत को ध्यानमें रखें।"[१७]

६:०१:१४

हिमांशु जोशी कृत उपन्यास 'छाया मत छूना मन' में नायिका की बहनमें कामकुंठा का चित्रण मिलता है। उसमें कामकुंठा का विकास क्रमशः होता है। विभाजन के कारण उन लोगों का परिवार अनेक आर्थिक संकटों से गुजरता है। वे घर से बेघर हो जाते हैं। लाहौरमें अच्छी खासी हैसियत वाले लोगोमें उनकी गणना होती थी। भारत आकर उन्हें दर दर की ठोकरें खानी पडती हैं। आघात के कारण पिता काम करने की स्थितिमें नहीं रह पाते। ऐसे में लड़कियों की माँ लड़कियों को अवैध तरीकों से पैसे कमाने के लिए प्रेरित करती है। नायिका को तो नौकरी मिल जाती है। किन्तु वहाँ भी उसे अपने बोस को खुश रखने के लिए अनचाहे समझौते करने पड़ते हैं। किन्तु उक्त स्थितियों के कारण नायिका की बहन गलत रास्तों पर चल पड़ती है। पहले पैसों के लिए और बादमें ऐयाशी के लिए वह ऐसे लोगों के हाथ का खिलौना बन जाती है जो लड़कियों की नंगी तसवीरों को खींचने का और बेचने का व्यवसाय करते हैं। उससे कुछ ब्ल्यू फिल्मों में भी काम करवाया जाता है। इन सब स्थितियों के कारण उसका यौनजीवन Normal नहीं रह पाता है। कामकुंठाओं के कारण उसमें अनेक प्रकार की विकृतियाँ पायी जाती हैं।

६:०१:१५

भगवतीचरण वर्मा कृत 'रेखा' उपन्यास की रेखा प्रारंभ में एक सहज, साधारण युवती के रुपमें पायी जाती है। वह प्रौढ़ावस्था के प्रोफेसर से प्रेमविवाह करती है। पश्चिम में प्रेम और सेक्स दो अभिन्न बातें समझी जाती है। हमारे यहाँ इन दोनोमें पार्थक्य किया जाता है। प्रेम में हृदय की पावनता, शुद्धता

और त्याग की भावना होती है । शारीरिक मिलन की अपेक्षा उसमें आत्मिक या आंतरिक मिलन को प्राधान्य दिया जाता है । जबकि सेक्समें वासना और शारीरिक क्षुधा ही मुख्य रहती है । इस संदर्भमें कहा गया है - "Sex appears as a Phenomenon of nature, common to man and beasts, love is the reasult of culture development and is not even found among all man"[१८] अर्थात् सेक्स मनुष्यों तथा जानवरों में पायी जाने वाली एक नैसर्गिक प्रवृत्ति है और प्रेम उसका एक सभ्य और सांस्कृतिक विकास है । अधिकांश मनुष्यों में यह प्रेम भावना नहीं होती । प्रस्तुत उपन्यास की रेखामें शुरूआती दौर में प्रेमभावना मिलती है, परन्तु जब उसकी कामवासना अभुक्त रहने लगती है तब क्रमशः यौनक्षुधा उसमें बढ़ने लगती है, और तब उसमें कामकुंठा का जन्म होता है । उसकी यह कामकुंठा सामाजिक मर्यादाओंका अतिक्रमण करती है । वह एक सामान्य स्त्री न रहकर एक ऐसी बहशी औरत हो जाती है जो निरंतर नये-नये शिकारों की टोह में रहती है। इसी प्यासके वशीभूत होकर वह योगेन्द्रनाथ के पास जाती है । योगेन्द्रनाथ प्रोफ़ेसर प्रभाशंकर का आदर करता है । वह उनको अपना गुरु भी मानता है । प्रोफ़ेसर प्रभाशंकर ही योगेन्द्रनाथ को दिल्ली विश्वविद्यालय में रीडर बनाकर लाये थे । अतः रेखा को भी वह इज्जत की नजरोंसे देखता था । परन्तु रेखा में तो कामाग्नि भभकती रहती थी । वह केवल शारीरिक क्षुधा की संतृप्ति हेतु ही उससे संपर्क स्थापित करती है । इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी है -"उसे तो शरीर भूख मिटाने के लिए शरीरतत्व की आवश्यकता थी । इसी लिए योगेन्द्रनाथ से संपर्क स्थापित किया था।"[१९] यह एक अलग बात है कि बादमें इसी योगेन्द्रनाथ के प्रति रेखामें स्वस्थ प्रेम-भावना विकसित होती है ।

६:०१:१६

'किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई' (शैलेश मटियानी) उपन्यास की सेठानी

नर्मदाबेन में काम-जनित कुंठाओं का वर्चस्व दिखाई पड़ता है । सेठानी नर्मदाबेन में खूब सारी काम कुंठाएँ मिलती हैं, उसका कारण उनकी अभुक्त काम-वासना है । विवाहपूर्व कॉलेज के अध्ययन काल में एक युवक से उनका प्रेम था । परन्तु वह प्रेम असफल रहता है । न चाहते हुए भी सेठानी का विवाह बंबई के सेठ नगीनदास से हो जाता है । सेठ नगीनदास अखूट संपत्ति के स्वामी थे । किन्तु युवानी के धनसे वंचित थे । नर्मदाबेन उनके जीवन में आई उससे पूर्व सेठ नगीनदास का जीवन बहुत असंयमी प्रकारका था । 'रेखा' उपन्यास के प्रोफ़ेसर प्रभाशंकर की भाँति सेठ नगीनदास के युवानी के खाते में भी अब बेलेन्स शेष नहीं था । दूसरी ओर सेठानी की जुवानी पूरे जोश पर थी । उस उददाम जुवानी के तरंगों को थामने की कुव्वत सेठमें नहीं थी । यदि सेठानी की काम-वासनाको उचितमार्ग मिलता तो उनमें कामकुंठाओं का जन्म न होता । परन्तु पति के रुपमें मिले सेठ नगीनदस जो करीब-करीब नपुंसक हो चले थे । सेठने अपनी इज्जत बचाने के लिए सेठानी की उददाम कामवासना को तृप्त करने के लिए कुछ उपाय किए, परन्तु जहाँ भी सेठानी किसी के साथ रागात्मकता से साथ जुड़ती, सेठ उसको किसी-न-किसी तरह से मरवा डालते थे । प्रेमजनित-सेक्स जीवनमें संतुलन लाता है । परन्तु जहाँ प्रेम न हो केवल सेक्स ही हो, वह काम-कुंठाओं को पैदा करता है । नर्मदाबेन सेठानी के साथ भी यही होता है । मटियानीजी के दूसरे उपन्यास 'कबूतरखाना' में हमारे तथाकथित अभिजात वर्ग की महिलाओ में जो कामकुंठाएँ मिलती हैं उसका चित्रण किया गया है । बन्बई में कई ऐसे सेठ रहते हैं जिनके जीवन का ध्येय केवल रूपिया-पैसा कमाना होता है । व्यावसायिकता उनके समग्र व्यक्तित्वमें व्याप्त हो जाती है । रुपये पैसे बटोरने में ये इतने अंधे हो जाते हैं कि अपने घर परिवार का उन्हें ध्यान नहीं रहता है । कई-कई दिनों तक अपनी युवा पत्नियों से वे अलग रहते हैं । दूसरी ओर ऐसे परिवारों में विलासिता की पूरी सामग्री होती है । खाने-पीने की कोई कमी नहीं होती । अतःइन सेठानियों का शरीर गदराया

हुआ होता है । ऐसी स्थितिमें उनमें कामेच्छाओं का अतिरेक होने लगता है । सभ्य समाज में उसकी पूर्ति हो नहीं सकती, अतः अधिकांशतः इन सेठानियों के काम सम्बन्ध हैसियत में छोटे लोगों से पनपने लगते हैं । बंबईमें घरघाटी नौकर को 'रामा' कहा जाता है । प्रायः सेठानियाँ ऐसे रामाओं से फँसी हुई होती हैं । इन 'रामाओं' को ही लेखकने 'कबूतर' कहा है । जैसाकि ऊपर कहा गया है जहाँ कामवासना केवल देह धर्म का अनुसरण करने लगती है वहाँ जीवन का कोई स्वस्थ दृष्टिकोण नहीं रह पाता । ऐसी स्थितिमें कामकुंठाओं का ही जन्म होता है । जो हमें प्रस्तुत उपन्यासमें दृष्टिगत होती हैं ।

६:०२:०१ प्रौढ अथवा वृद्धावस्था के स्त्री पुरुषो में :

यदि मनुष्य का जीवन साधारण तरीकों से व्यतीत हुआ हो तो उसमें किसी प्रकारकी कुंठा का जन्म नहीं होता। वस्तुतः काम-कुंठा के परिहार हेतु ही हमारे यहाँ विवाह संस्था का जन्म हुआ था । अतः जहाँ प्रेमभावना का कामभावना से समन्वय होता है वहाँ किसी प्रकार की कामकुंठा की कोई गुंजाईश नहीं रहती । मनुष्य को जिस प्रकार अन्न, पानी, हवा चाहिए; ठीक उसी प्रकार युवा व्यक्ति को, चाहे वह पुरुष हो चाहे स्त्री, सेक्स की आवश्यकता रहती है। यदि इसकी संपूर्ति सामाजिक, पारिवारिक ढंग से संतुलित तरीके से हो जाती है ; तब तो व्यक्ति के जीवनमें कोई कामकुंठा का जन्म नहीं होगा । परन्तु यदि ऐसा नहीं होता तब व्यक्ति कामकुंठाओं का शिकार होता है । शैशव अवस्था, किशोरावस्था और युवावस्था में यदि कोई व्यक्ति काम-कुंठाओंसे नहीं ऊबर पाता, ऐसे लोगोमें प्रौढ़-अवस्था, यहाँ तक की वृद्धावस्थामें भी काम कुंठाएँ पायी जाती हैं । ऊपर जिन उपन्यासों की चर्चा की गई है उनमें जो किशोरावस्था और युवावस्था तक में इन कामकुंठाओं से मुक्त नहीं हो सके हैं । ऐसे व्यक्ति प्रौढ़-अवस्था और वृद्धावस्था में भी काम कुंठाओमें पूरी तरह ग्रस्त हो जाएँगे ऐसा हम कह सकते हैं ।

६:०२:०२

उपेन्द्रनाथ अश्क द्वारा प्रणीत उपन्यास 'शहरमें घूमता आईना' में ऐसे बहुतसे पात्र मिलते हैं जो प्रौढ़ावस्था या वृद्धावस्था के करीब हैं और जिनमें अनेक प्रकार की यौन कुंठाएँ पायी जाती हैं । डॉ. मक्खनलाल शर्मा के शब्दो में प्रस्तुत उपन्यास यौनभुक्खडों, बौनों, कायरों, जनखों, पागलों और दिमागीऐयाशों का उपन्यास है ।[२०] प्रस्तुत उपन्यासमें बदद्दा, रामदित्ते, फाल्गुराम जैसे प्रौढ़ पात्र मिलते हैं जो दमित कामवासना के फलस्वरुप कामकुंठाओं से ग्रसित होकर पागल हो गये हैं । उपन्यास में बिल्ला, जगना, देबू, प्यारु जैसे कुछ प्रौढ़ उम्र के पहलवान पाये जाते हैं, जिनमें समलैंगिकता की प्रवृत्ति मिलती है । ये पहलवान अपनी कामकुंठाओं के कारण लड़कियों की अपेक्षा लड़कीनुमा लड़कों पर अधिक आकर्षित होते हैं ।[२१] उपन्यास का नायक चेतन भी कामकुंठाओं से ग्रसित है । परन्तु युवा होने के कारण उसका उल्लेख यहाँ नहीं हो सकता । पूर्ववर्ती पृष्ठोंमें उसका उल्लेख किया जा चुका है । परन्तु चेतन के पिता सादीराम में कामकुंठाएँ दृष्टिगत होती हैं । सादीराम कृष्ण और राधाका नृत्य करनेवाले लड़कों के प्रति अत्यधिक आकृष्ट रहते थे ।[२२] उपन्यास में चेतन के मित्र अमीचंद का उल्लेख आता है । अमीचंद डिप्टी-कलक्टर हो गया है । इसी अमीचंद के एक मामा है - सोहनलाल । सोहनलाल को वृद्धावस्था में भी सुंदर लड़कोंकी जरुरत रहती थी, जो उनका विस्तर गर्म कर सके ।[२३] इस प्रकार अश्कजी के इस उपन्यासमें हमें ऐसे कई प्रौढ़ और वृद्ध पात्र मिलते हैं जो कामकुंठाओं से ग्रसित हैं ।

६:०२:०३

डॉ. शिवप्रसादसिंह के उपन्यास 'अलग अलग वैतरणी' में जगेसर तथा हेडमास्तर जवाहरसिंह के पात्र आते हैं । जो लगभग प्रौढ़ावस्था में आ पहुँचे

हैं । कामकुंठा के कारण जगेसर में हमें एक प्रकार की यौन विकृति मिलती है । इस विकृति के कारण उसे नंगी औरतों की तस्वीरों को देखने में विशेष दिलचस्पी रहती है । वह इस प्रकार की तस्वीरों को जहाँ से भी मिले बटोरता रहता है और फिर अपने एकान्त के क्षणों में उनको देखता रहता है । जगेसर में यह यौन विकृति इस हद तक बढ़ गई है कि उसे नैसर्गिक कामेच्छा को जागृत करने के लिए Stimulations के रूपमें इन तस्वीरों का इस्तेमाल करना पड़ता है ।[२४] दूसरा ऐसा पौढ़ पात्र है - हेडमास्तर जवाहरसिंह का । हेडमास्तर जवाहरसिंह अपने गाँव से दूर करैता नामक गाँव में हेडमास्तरी करते हैं । उनकी पत्नी तथा परिवार उनके अपने गाँव में है । खेतीबाड़ी के कारण पत्नी तथा परिवार को वे करैता ला नहीं सकते । परिणामस्वरूप उनमें समलैंगिक कामकुंठा का विकास होता है । वे अपनी स्कूल के एक बच्चे को अपने यहाँ सोने के लिए बुलाते हैं और धीरे-धीरे उसे पटा-फुसलाकर, खानेपीने की चीजवस्तु की लालच देकर, अपने वशमें कर लेते हैं । वह अपने उस शिष्य के साथ हमबिस्तर होते हैं और उसीसे पत्नी का काम चलाते हैं ।[२५]

६:०२:०४

डॉ. रामदरश मिश्र द्वारा प्रणीत उपन्यास 'सूखता हुआ तालाब' ग्राम्य जीवन की यौनलीलाओं से अटा-पडा है । प्रस्तुत उपन्यासमें युवापात्रों में तो हमें अनेक कामकुंठाएँ मिलती ही है ; परन्तु गाँव के कुछ प्रौढ़ लोगों में भी विविध प्रकार की कामकुंठाएँ पायी जाती हैं । ऐसे एक प्रौढ़ व्यक्तियों में कामरेड मोतीलाल है, जो कहने को तो मार्क्सवादी - समाजवादी है ; परन्तु दूसरी ओर अपने छोटेभाई की विधवा पत्नी से अवैध सम्बन्ध रखते हैं । मोतीलाल में कामातिरेकता काफी बढ़ी-चढ़ी है । अतः अपनी यौनक्षुधा की पूर्ति के लिए वे सामाजिक, पारिवारिक नैतिकता की सीमाओं का भी उल्लंघन

करते हैं । दूसरे ऐसे प्रौढ़पात्र हैं शिवलाल और मास्टर धर्मेन्द्र । शिवलाल विधुर है और उनकी कामेच्छा बहुत बढ़ी-चढ़ी रहती है । अपनी यौनक्षुधाकी पूर्ति के लिए वे गाँव की अनेक स्त्रियोंसे अवैध शारीरिक सम्बन्ध रखते हैं । अपनी लगभग तमाम हलवाहिनों से उनके संबंध होते हैं । इसके अलावा चेनइया चमारन से भी उनके शारीरिक संबंध थे । चेनइया से तो शिवलाल, दयाल तथा मास्टर धर्मेन्द्र तीनों के संबंध थे । और ये तीनों परस्पर ये जानते हैं । शिवलाल तथा मास्टर धर्मेन्द्रमें गाँव की पट्टीदारी के हिसाब से चाचा-भतीजा का सम्बन्ध है । परन्तु उनमें कामकुंठाएँ उस हद तक घर कर गई हैं कि पारिवारिक सम्बन्धों की पवित्रता या लाज-शरम जैसी भी कोई चीज रही नहीं है । अन्यथा चाचा-भतीजे के संबंध एक ही स्त्री से कैसे हो सकते हैं ? मास्टर धर्मेद्र से अपने चाचा (पट्टीदारींके) शिवलाल की पुत्री कलावती को जब गर्भ रह जाता है तब इस पूरी यौनलीला को राजनीतिक रंग देने का प्रयास किया जाता है ।

६:०२:०५

डॉ. राही मासूम रज़ा के उपन्यास 'आधागाँव' तथा 'दिल एक सादा कागज' में कई एसे प्रौढ़ पात्र मिलते हैं जिनमें यौन काम-कुंठाएँ दृष्टिगत होती हैं । प्रौढ़ वय के पुरुषों में समलैंगिक संबंध दो प्रकार के होते हैं । एक संबंध वह होता है जिसमें पौढ़ वय का पुरुष समवयस्क या अपने से छोटे व्यक्ति के साथ यौन संबंध बाँधता है उसमें वह दूसरी व्यक्तिसे स्त्री संबंधों की पूर्ति करता है । 'अलग अलग वैतरणी' के मास्टर जवाहरसिंह इसके उदाहरण हैं । परन्तु दूसरे प्रकार की समलैंगिकता वह होती है जो नवाबी सभ्यता की देन है और जिसे लौंडाबाजी कहा जाता है । इसमें खूबसूरत, नमकीन प्रकार के लड़कों के साथ गुदामार्गीय मैथुन (Anal-coitus) किया जाता हैं । 'आधागाँव' उपन्यासमें

सलीमपुर के जमींदार अशरफुल्लाखां अपने साथ नमकीन लड़कों को रखते थे और उनके साथ गुदामार्गीय मैथुन करते थे ।[२६]

अतः अशरफुल्लाखां कामजनित कुंठासे पीड़ित है ऐसा हम कह सकते हैं । इसी उपन्यास में तक्कनचाचा नामक पात्र का आलेखन भी किया गया है । यह तक्कनचाचा प्रौढ़ वयस्क हैं । उनमें भी यह आदत पायी जाती है । वह कम उम्र के लड़कों को तरह-तरह के प्रलोभन देकर एकांत स्थान पर ले जाते हैं और उनके साथ गुदामार्गीय मैथुन द्वारा आनंद प्राप्त करते हैं । 'आधागाँव' उपन्यासमें वे कम्मो नामक एक लड़के को गोदाम में ले जाते हैं और उसके साथ यह सृष्टि विरुद्ध का कार्य करते हैं । गाँव के कुछ लोग तक्कनचाचा और कम्मो को देख लेते हैं, अतः पूरे गाँव में ये सम्बन्ध गंदे हँसी मजाक और ठठ्ठा मश्करी का सबब बन जाते हैं । तक्कनचाचा तो प्रौढ़ वय के हैं । उन पर इन बातों का अधिक असर नहीं पड़ता, परन्तु कम्मो के चरित्र पर उसका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है । उसमें हीनताग्रंथि उत्पन्न होती है जिससे वह ताजिन्दगी उबर नहीं पाता । डॉ. राही मासूम रज़ा के ही 'दिल एक सादा कागज' उपन्यासमें भी ऐसे कई प्रौढ़ पात्र मिलते हैं जिनमें वह आदत पायी जाती है । प्रस्तुत उपन्यास में नारायणगंज की स्कूल पोलिटिक्स में इस लौंडेबाजी का एक महत्वपूर्ण रोल है ।[२७]

६:०३:०० शिशुअवस्थाके बाल-बालिकाओंमें :

सामान्य तौर पर कामकुंठाएँ युवा तथा प्रौढ़ या वृद्ध अवस्था के लोगोमें पायी जाती है, परन्तु कभी-कभार बच्चे जब शिशु अवस्थामें ही कुछ अघटित प्रसंगोंसे गुजरते हैं, या कुछ एसा देख लेते हैं जो उनकी अवस्था के बच्चों को नहीं देखना चाहिए ऐसी स्थितिमें छोटी अवस्था के बच्चों में भी कामकुंठाएँ पनपने लगती हैं । ग्रामीण विस्तारो में जहाँ छोटे बच्चे खेतों या जंगलोमें जाते

हैं वहाँ यदि ने किसी युवा-युग्म को क्रीडावस्थामें देख लेते हैं तो उसका कुप्रभाव उनके कोमल मस्तिष्क पर पड़ता है । उसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रोमें बच्चे पशुओं के मैथुन को भी रात-दिन देखते रहते हैं । उनका प्रभाव भी उन पर पड़ता है । यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों में जातीय संज्ञान पहले आ जाता है ।

६:०३:०१

पूर्ववर्ती पृष्ठों में डॉ. शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास 'अलग-अलग वैतरणी' का जिक्र आया है । उसमें गोपाल और कल्पू नामक दो किशोरों के चरित्र बताये गये हैं । खराब संगत के कारण गोपाल और कल्पूमें असमय ही हस्तमैथुन की आदत लग जाती है । फलतः उनका मन रुग्ण हो जाता है और युवावस्था तक पहुँचते पहुँचते इन गंदी आदतों के कारण वे नपुंसक अवस्था को पहुँच जाते हैं । यह नपुंसकता की वैतरणी गोपाल और कल्पू को तो पार करनी ही पड़ती है परन्तु उसका शिकार दीपा भी होती है । दीपा एक शिक्षित एवं संस्कारी लड़की है परन्तु कल्पू जैसे तन मन के रोगी और नपुंसक व्यक्ति के साथ उसका विवाह होता है । फलतः उसकी जिन्दगी एक तड़प एवं कसक बन कर रह जाती है जिसका उल्लेख हम पूर्ववर्ती पृष्ठोंमें कर चुके हैं ।

६:०३:०२

जगदम्बाप्रसाद दीक्षित कृत उपन्यास 'मुर्दाघर' में माहिम की झोंपडपट्टी का चित्रण मिलता है । प्रस्तुत उपन्यास में झोंपडपट्टी के बच्चों का वर्णन जहाँ आता है वहाँ उन बच्चों में व्याप्त गंदी, अश्लील, चेष्टाओं का वर्णन भी है । इन चेष्टाओं के मूलमें उनके जीवन में व्याप्त कामकुंठाएँ होती हैं । झोंपडपट्टी के लोगों का जीवन बहुत ही निम्न स्तर का होता है । इन झौंपडपट्टियों में कुछ

रुपयों में शरीर का सौदा करनेवाली वेश्याएँ भी रहती हैं। इन वेश्याओं के साथ उनके दलाल भी होते हैं। अभिप्राय यह कि पूरा माहौल गंदा और घिन्नौना होता है। इन बच्चों में कई बच्चे तो इन वेश्याओं के ही होते हैं। ये वेश्याएँ तथा उनसे जुड़े हुए लोग बहुत ही गंदी, घिन्नौनी और अश्लील भाषा का प्रयोग करते हैं। माँ-बहन की गंदी गालियाँ तो उनके होठों पर होती है। झोंपडपट्टी में रहनेवाले लोग देहव्यापार को भी ये नन्हे बच्चे अपनी आँखों से बिना रोक-टोक देखते हैं। अतः इन बच्चों की चंचल निर्दोषता समाप्त हो जाती है। छोटी उम्र में ही जीवन की गंदी घिनौनी वास्तविकताओं से वे परिचित हो जाते हैं। ऐसे माहौल में रहकर यदि काम-कुंठाएँ न पैदा हो तो ही आश्चर्य की बात है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखकने इन बच्चोंकी कईं गंदी हरकतों का वर्णन किया है जो काम-कुंठाओं द्वारा परिचालित हैं।

६:०३:०३

मन्नू भंडारी कृत 'आप का बंटी' उपन्यासमें भी हमें शैशवकालीन कामकुंठा का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। 'मुर्दाघर' में जहाँ नितांत निम्नस्तरीय जीवन का चित्रण है वहाँ प्रस्तुत उपन्यास का परिवेश तो अत्यन्त सुसंस्कृत है। इसकी नायिका शकुन कॉलेज की प्राचार्या है। अतः इसमें निरुपित जीवन को हम उच्च मध्यवर्गीय या उच्चवर्गीय प्रकार का कह सकते हैं। अतः शकुन के बेटे बंटी की परवरिश में कोई ऐसी बात नहीं है, परन्तु यहाँ बंटी की त्रासदी यह है कि उसके माता-पिता अलग-अलग रहते हैं। जब तक शकुन दूसरा विवाह नहीं करतीं तब तक तो बंटी में दूसरे प्रकार की ग्रंथि मिलती है, परन्तु कामकुंठाओं से वह बहुत दूर है। बंटी के जीवनमें कामकुंठाओं का प्रवेश शकुन के दूसरे विवाह से होता है। शकुन डॉ. जोशी से विवाह करती है जिसके भी अपने दो बच्चे हैं। अतः बंटी को उन बच्चों

के साथ बच्चों के कमरें में रात के समय सोना पड़ता है । बंटी को ऐसे अकेले में सोने की आदत नहीं है । वह या तो मौसी (आया) या शकुन के साथ सोता रहा है । अब यहाँ एक अलग माहौल में उसे रहना पड़ता है । फलतः वह रात को कई बार चौंक पड़ता है । बिस्तर गिला करता है । मौसी ने उसे अनेक डरावनी कहानियाँ सुनाई थीं, अब उन कहानियों का भयानक वातावरण उसके मानसपटल पर स्वप्न रूपमें मँडराने लगता है । उसे भयानक और डरावने प्रकार के सपने आते रहते हैं । ऐसी अवस्थामें एक रात वह मारे डर के शकुन के कमरे में चला जाता है। शकुन और डॉ. जोशीने कमरा बन्द नहीं किया था । उनका खयाल था कि देर रातमें वहाँ कौन आ सकता है । डॉ. जोशी के बच्चे पूर्णतया शिक्षित थे । उन्हें उस प्रकार से रहने की आदत थी । अतः बीच में उठकर वे कभी दूसरों के कमरों की तरफ जाते नहीं थे । परन्तु बंटी की बात अलग है वह इस वातावरण से पूर्णतया अनभिज्ञ है । अतः वह उनके कमरें में चला जाता है । जहाँ पर शकुन तथा डॉ. जोशी को नग्न अवस्थामें देख लेता है । इस दृश्य का बहुत ही बुरा प्रभाव बंटी पर पड़ता है । इसके पूर्व उसने अपनी ममा को कभी इस रूपमें देखा नहीं था । उसे यह स्थिति बहुत ही विचित्र प्रकार की लगती है। छोटा बंटी यह समझ नही पाता कि आखिर ममा को डॉ. जोशी के साथ इस प्रकार सोने की क्या जरुरत है । उसके कोमल मस्तिष्क पर ममा की जो छवि थी वह अत्यन्त पवित्र और निष्कलुष थी । अतः यह परिदृश्य बंटी के मानस पटल पर निरंतर मँडराता रहता है । यहाँ से उसमें कामकुंठाओं के निर्माण की प्रक्रिया शुरु हो जाती है । अब वह गंदे-गंदे चित्र देखने लगता है । उस प्रकारकी कल्पनोओं में खोया रहता है । लेखिकाने बंटी में विकसित इन कामकुंठाओं का बड़ा ही मनौवैज्ञानिक दृष्टि से चित्रण किया है । अब उसका हाथ बार-बार गुप्त अंगो को टटोलने लगता है । स्नान करते समय वह इन अंगो को विशेष रुपसे देखता है । उनको छूता है । उनसे छेड़-छाड़ करता है । जो बंटी पढ़ने में

बहुत तेज़ था, अब पढ़ाई में वह पिछड़ने लगता है । उसमें गंदी आदतों का विकास होता है । लेखिकाने इसका वर्णन इस प्रकार किया है - ''वह स्नान करते समय अपने शिश्न को हाथ से तौलता है, देखता परखता है । वह नाहने लगा तो अपने अंग को लेकर भी वैसी थ्रील महसूस होने लगी । मन ही मन डॉ. साहब के साथ अपनी तुलना शुरु हो गयी । बड़ा हो कर वह भी ऐसा ही हो जाएगा । वह सोच रहा है । हाथ में लेकर देख रहा है और भीतर ही भीतर ही एक अजीब-सी सिहरन हो रही है । पहली बार उसे लग रहा है, जैसे वह है, उसके भी कुछ है ।[२८] उसकी कामकुंठा का शिखर स्थान (climax) वह बिन्दु है जिसमें ड्रोइंग की कक्षामें पदार्थ चित्र बनाते समय जो अन्य वस्तुओं के साथ बोटल रखी है उस बोटल को लेकर बंटी के मस्तिष्क में ऐसी छवि उभरती है कि वह बोटल नहीं कुछ अन्य वस्तु है । अचानक वह बोटल उलट जाती है और डॉ. जोशी के दो पैरों के बीच उलट जाती है ।'' इस प्रकार कामकुंठा के कारण बंटी जो भी देखता है उसमें किसी न किसी प्रकार का मैथुनीय सम्बन्ध वह स्थापित कर लेता है । मन्नूजी ने वह बताया नहीं है परन्तु आगे चलकर ऐसे बच्चों में हस्तमैथुन जैसी आदत विकसित हो सकती है । हमारे पुराने आचार्योंने हस्तमैथुन के बड़े ही भयंकर चित्र खींचे हैं । बड़े ही भयंकर परिणामो की वे बात करतें हैं । किन्तु आधुनिक यौन मनोवैज्ञानिक हस्तमैथुन को उतना खराब या कुत्सित नहीं मानते हैं । परन्तु उसकी भी एक उपयुक्त अवस्था होती है । किशोर या युवा वर्ग के युवकोंमें यदि यह आदत है तो उसे नैसर्गिक कहा जा सकता है । परन्तु बंटी जैसे छोटे बच्चे में यदि ऐसी आदत विकसित हो तो आगे चलकर उसमें नपुंसकता की अवस्था आ सकती है । 'अलग अलग वैतरणी' के गोपू और कल्पू इसके उदाहरण हैं ।

६:०३:०४

मणि मधुकर कृत 'सफेद मेमने' उपन्यास में बन्नो के चरित्रमें काम-कुंठा का निरुपण शैशव अवस्थासे ही मिलता है । बन्नो में कामकुंठा का विकास उसकी मामी के कारण होता है । बन्नो के मां-बाप की मृत्यु सैंतालीस के दंगो में हो गई थी । अतः उसका पालन-पोषण उसके मामा-मामी करते हैं । उसकी मामी एक ठंडी औरत है । अतः बन्नो का उपयोग वह अपने लिए करती है । बन्नो के आगे बार-बार सैंतालीस की घटनाओं का वर्णन करके उसके मस्तिष्क में यौन भावना के लिए वह वितृष्णा के बीज बो देती है । मामी अपनी भाँजी के साथ सजातीय संबंध बांधती है । ठंडी औरत होने के कारण पति से उसकी यौन तृष्टि नहीं होती, जिसकी आपूर्ति वह इस प्रकार करती है । इस कामकुंठा के कारण बन्नो भी बादमें एक ठंडी औरत हो जाती है । यौन मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि शैशवकालीन प्रभावों से जिन स्त्रियो में ठंडापन विकसित होता है, उन स्त्रियो का ठंडापन प्रबल कामावेग वाला पुरुष कर सकता है । परन्तु दुर्भाग्य से बन्नो को पतिरुप में अधबूढ़ा रामावतार मिलता है । अतः उसका ठंडापन बरकरार रहता है । बादमें जब संदो उसके जीवनमें आता है, तब उसके प्रबल कामावेग के सामने उसका ठंडापन खंड-खंड हो जाता है । यहाँ गौरतलब केवल एक ही बात है कि बन्नो के ऊपर निरुपित ठंडेपन के मूलमें उसकी शैशवकालीन काम-कुंठाएँ कारणभूत थीं ।

६:०३:०५

राजकमल चौधरी द्वारा लिखित उपन्यास 'मछली मरी हुई' की शिरीं महेता एक लिस्बियन औरत है । शिरीं के इस लिस्बियनपने के पीछे उसका शैशवकालीन जीवन और शैशवकालीन कामकुंठाएँ कारणभूत हैं । शिरीं की माँ की मृत्यु प्रसवकाल में हुई थी । शिरीं की बड़ी बहन इसका अतिरंजित वर्णन

उसके सामने करती रहती है । माँ की मृत्यु का कारण वह छोटी शिरीं को स्त्री-पुरुष सम्बन्ध ही बताती है । अतः बचपन से ही शिरीं को वह पुरुष मात्र से दूर रहने की सीख देती है, इतना ही नहीं पुरुष जात के प्रति एक प्रकार की विद्वैष भावना वह उसमें पैदा कर देती है । इसके पीछे उसका अपना स्वार्थ है । वह अपनी छोटी बहन के माध्यमसे अपनी यौनेच्छाओं को तृप्त करती रहती है । यौनेच्छा की तृप्ति का यह माध्यम कहीं उससे छीन न जाए इस दृष्टिसे ही वह यह सब करती है । शिरीं पहले अबोध भावसे और बादमें संज्ञानता के साथ उसमें लिप्त होती है । यहाँ ध्यातव्य तथ्य यह है कि शिरीं की बहन बचपन से ही शिरीं में कामकुंठाओं को आरोपित कर देती है। इन कामकुंठाओं के कारण शिरीं Normal न रहकर एक 'लिस्बियन औरत' बन जाती है । जैसा कि पहले कहा गया है शिरीं को यदि ढंग का पति मिलता तो उसकी यह आदत छूट सकती थी, परन्तु पतिरुपमें उसे जो पुरुष मिलता है वह प्रायः अर्धनपुंसक सा है । फलतः शिरीं अपनी कामतृष्टि के लिए नये-नये शिकारों को ढूंढ़ती रहती है । उच्चवर्गीय समाजमें आयोजित विभिन्न पार्टियों में से वह अपने शिकारों का चुनाव कुशलता पूर्वक कर लेती है । ऐसे ही एक समारोह में कल्याणी की पुत्री प्रिया को वह फँसाती है। अंत में प्रिया के उकसाने के कारण निर्मल पद्मावत जब अपनी नपुंसकता की ग्रंथि से मुक्त हो जाता है तब वह एक साथ प्रिया और शिरीं उभय के साथ सफल संभोग करता है । इस संभोग के बाद शिरीं निर्मल पदमावत की हो जाती है और एक Normal जिन्दगी जी ने लगती है ।

६:०४:०० कामकुंठाओं के परिणाम :

पूर्ववर्ती पृष्ठों में इसे भलीभाँति निरूपित किया गया है कि कुंठाओं के कारण व्यक्ति सामान्य (Normal) प्रकार का जीवन नहीं व्यतीत कर पाता ।

उसमें किसी-न-किसी प्रकार की असामान्यता (Abnormality) पैदा हो जाती है । मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में इस प्रकार की कामकुंठाओं का चित्रण विशेष रुपसे होता है । इसका अर्थ यह कतई नहीं की दूसरे प्रकार के उपन्यासों में इस प्रकर की कामकुंठाएँ नहीं होतीं । वस्तुतः उपन्यास तो जिन्दगी का आईना है, अतः जो भी जीवन में होगा वह उसमें प्रतिबिम्बित होगा ही । उपन्यासमें मनष्यों के जीवन का निरूपण होता है । और मनष्य तो सर्वत्र होते हैं । सामाजिक उपन्योसों के मनुष्य अलग और किसी अन्य प्रकार के मनुष्य अलग, ऐसा नहीं होता है । अतः सामाजिक, राजनीतिक, आँचलिक, किसी भी प्रकार के उपन्यासमें मानवजीवन तो एक-सा ही होता है । किन्तु मनोवैज्ञानिक उपन्यासो में कामकुंठाओं का चित्रण कुछ आधिक्य से मिलता है तो उसका कारण यह है कि मनोवैज्ञानिक उपन्यासो में केन्द्र ही मानव है । अन्य प्रकार के उपन्यासो में लेखक का आधारबिन्दु कुछ ओर होता है, अतः उसका ध्यान जीवन के दूसरे आयामों पर होता है । मनोवैज्ञानिक उपन्यासो में लेखक का लक्ष्य ही व्यक्ति, व्यक्ति के मन, उसके अेचतन मन और उसकी गहराइयों का निरूपण करना होता है । अतः मनोवैज्ञानिक उपन्यासो में यदि काम-कुंठाओं के चित्रण का आधिक्य है, तो उसे स्वाभाविक ही समझा जाएगा। मानवचरित्र बड़ा जटिल होता है । उसका व्यवहार क्षणों की लहरों पर तैरता है । हम लाख तार्किक होने का प्रयास करें, लाख गंभीरता और संजिदगी को धारण करें, मन की उछलकूद का कहीं पार नहीं पा सकते । एक क्षण पर मनुष्य का व्यवहार एक प्रकार का होता है तो दूसरे ही क्षण उसका व्यवहार और प्रकार का हो जाता है । ये सब होता है उसके पीछे अचेतन मन में स्थित ग्रंथियाँ और कुंठाएँ कारणभूत होती हैं । पूर्ववर्ती पृष्ठों में भलीभाँति विश्लेषित किया गया है कि कुंठाएँ कभी जातिगत होती हैं, कभी आर्थिक, कभी नैतिक तो कभी कुंठाओं के मूलमें काम भावना होती है । कामभावना से परिचालित कुंठाओं को ही कामकुंठा कहा गया है जिनका निरूपण प्रस्तुत अध्याय का मुख्य प्रतिपाद्य रहा

है । व्यक्ति का जीवन यदि सामान्य (Normal) प्रकार का रहा, सहज रहा तो उसमें कामकुंठाओं का निर्माण नहीं होगा । अतः उसका जातीय-जीवन (Sex life) भी सामान्य और सहज (Normal) प्रकार का रहेगा । परन्तु कामकुंठाओं से पीड़ित व्यक्ति का जातीयजीवन अनेक प्रकार के विकारों और वृत्तियों से परिपूर्ण होगा । प्रस्तुत शीर्षक के अन्तर्गत हमारा उपक्रम उन विकारों और विकृतियों को उल्लेखित करने का रहेगा, जिनका निर्माण मानव मन में कामकुंठाओं के कारण होता है ।

६:०४:०१ जातीय ठंडापन (Frigidity) :

प्रत्येक युवा व्यक्तिमें, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष एक हद तक जातीय इच्छा रहती है । उसका अतिरेक भी बुरा है और उसका न होना भी बुरा है । जातीय इच्छाओं के प्रति अभाव की जो स्थिति है उसे स्त्रियों के पक्षमें ठंडापन कहते हैं । जिस प्रकार कामजनित कुंठाओं के कारण व्यक्तिमें दूसरे प्रकार की विकृतियाँ आती हैं । कई बार उसके कारण जातीगत ठंडापन भी आता है । विवेच्य उपन्यासोंमें कृष्णा सोबती कृत 'सूरजमुखी अंधेरे के' तथा पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' के 'बुधवा की बेटी', मणि मधुकर कृत 'सफेद मेमने' प्रभृति उपन्यासों में हमें जातीय ठंडापन के उदाहरण मिलते हैं । 'सूरजमुखी अंधेरे के' की रत्तिका में इसका कारण शैशवावस्था में उसका बलात्कृत होना है । 'बुधवा की बेटी' में भी यही कारण है, परन्तु रत्तिका और रधिया की परिणतियाँ अलग-अलग प्रकार की हैं । रत्तिका में जातीय जीवन भोगने की इच्छा है, परन्तु कामकुंठा द्वारा निर्मित ठंडेपन के कारण वह जातीय जीवन का उपभोग नहीं कर सकती है । इसके विपरीत रधिया में प्रतिशोध की भावना काम करती है । 'सफेद मेमने' तथा 'पतझड की आवाजें' में नायिकाओं को जिन सामाजिक परिवेशोमें रहना पड़ता है उनके कारण वह वृत्ति आती है ।

६:०४:०२ नपुंसकता (Impotence) :

स्त्रियों में जिसे जातीय ठंडापन (Frigidity) कहते हैं, पुरुषोमें उसे नपुंसकता (Impotence) कहा जाता है । यह नपुंसकता दो प्रकार की होती है - कुदरती और पारिस्थितिक या मानसिक । जहाँ तक कामकुंठाओं का सवाल है, कुदरती नपुंसकता से उसका कोई लेना-देना नहीं है । पारिस्थितिक या मानसिक नपुंसकता कामकुंठाओं का परिणाम हो सकती है । 'मछली मरी हुई' के निर्मल पदमावत में जो नपुंसकता है वह एक सुंदर मनचाही युवती द्वारा तिरस्कृत होने के कारण है । निर्मल वर्मा में कामकुंठाओं का प्रभाव द्विगुणीत है । शैशव कालमें उसकी माँ एक अन्य पुरुष के साथ भाग जाती है । जाहिर है माँ का वह भागना उसकी जातीय इच्छाओं के आवेग के कारण ही हुआ होगा । अतः उसके प्रति घृणा का भाव तो शैशवकाल से ही उसके अचेतन मन का कब्जा लिए हुए था। उसके बाद यदि उसे किसी सुशील, संस्कारी स्त्री का प्रेम मिला होता तो वह साधारण हो सकता था, पर प्रेमिका का रुपमें मिली कल्याणी, जो पैसों के लिए अनेक पुरुषो की अंकशायिनी हो चुकी थी । कल्याणी के लिए प्रेम का अर्थ शारीरिक प्रेम ही था । अतः वह निर्मल का तिरस्कार करती है । कल्याणी द्वारा अपमानित होने के कारण उसकी काम-कुंठाओं में और बढ़ोतरी होती है । फलतः उसकी नपुंसकता भी बढ़ जाती है । बादमें अनुकूल परिस्थितियों के पैदा होने पर उसकी साधारणता लौट आती है । भगवतीचरण वर्मा कृत 'रेखा' उपन्यास में प्रोफ़ेसर साहब में जो नपुंसकता बतायी गयी है वह भी मानसिक प्रकार की है । रेखा और प्रोफ़ेसर साहब में उम्र का एक बहुत बड़ा फासला है । इसे लेकर प्रोफ़ेसर कुंठित रहते हैं । जब तक रेखा पति परायण रहती है, तब तक उनमें यह बात नहीं होती है । परन्तु रेखा की चरित्रहीनता के प्रकट होने पर वे अधिक कुंठित हो जाते हैं । इस कुंठा के कारण उनमे नपुंसरकता का प्रवेश होता है । आश्चर्य की बात तो यह

है कि जो प्रोफ़ेसर रेखा के संदर्भ में नपुंसकता का अनुभव करते हैं, अन्य पौढ़ स्त्रियों के सम्मुख उनमें इस प्रकार की भावना नहीं आती और उनके साथ के संबंधों में वे पूर्णतया पुरुषत्व का अनुभव करते हैं। जो प्रोफ़ेसर रेखा को संतुष्ट नहीं कर सकते मिसेज रत्ना चावला जैसी पौढ़ा को भलीभाँति संतुष्ट करते हैं। विदेशों में तो कुछ स्त्रियों का व्यवसाय ही मनोवैज्ञानिक दृष्ट्या नपुंसक पुरुष की इस ग्रंथि को दूर कर उन्हें जातीय स्वस्थता प्रदान करने का होता है।[२९]

६:०४:०३ पुरुष समलैंगिकता (Homo-sexuality) :

जिन लोगोमें जातीय वृत्ति स्वलिंगीय व्यक्तियों के प्रति होती है उनको पुरुषो के संदर्भ में Homosexulity कहा जाता है । अर्थात् एक पुरुष का स्त्री के प्रति आकर्षण स्वाभाविक कहा जाएगा। किन्तु एक पुरुष यदि पुरुष के प्रति आकर्षित होता है तो उसे अस्वाभाविक माना जाएगा और ऐसा कामकुंठाओं के कारण होता है। विवेच्य उपन्यासो में 'शहरमें घूमता आईना', 'आधागाँव', 'दिल एक सादा कागज', 'अलग अलग वैतरणी' प्रभृति उपन्यासो में हमें समलैंगिक पुरुषों के अनेक उदाहरण मिलते हैं जिनका विवेचन पूर्ववर्ती पृष्ठों में एकाधिन बार किया गया है । अतः उन तथ्यों का पुनरावर्तन यहाँ अनावश्यक है।

६:०४:०४ स्त्री समलैंगिकता (Lesbiandism) :

जब कोई स्त्री समलैगिक यौनाचार में लिप्त रहती है तब उसे 'लिस्बियन (Leasbian)' कहा जाता है। यह प्रवृत्ति भी कामकुंठा का ही परिणाम है। जब किसी स्त्री की यौनेच्छा स्भाविक ढंग से पूर्ण नहीं होती तब वह उसकी पूर्ति समलैंगिक समागम द्वारा करना चाहती है। कभी ऐसा भी होता है कि किसी स्त्री में स्वाभाविक मैथुन (Coitus) के प्रति कोई भयानक डर बैठ जाता

है । ऐसी स्थितिमें वह स्त्री पुरुष-सहवास के डरती है । स्त्री-सहवास सलामत होता है यह सोचकर वह उसकी ओर आकृष्ट होती है । एक बार यदि कोई स्त्री इस प्रवृत्ति की ओर अग्रसरित होती है तो वह अन्य स्त्रियों को भी उसमें फँसाने की चेष्टा करती है । राजकमल चोधरी के उपन्यास 'मछली मरी हुई' मणि मधुकर के उपन्यास 'सफेद मेमने' तथा सुरेन्द्र वर्मा कृत उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' में स्त्री समलैंगिकता के कई उदाहरण मिलते हैं । 'मछली मरी हुई' की शीरीं मेहता की माँ का निधन प्रसव काल में हुआ था । यह बात उसकी बहन शीरीं मेहता को अनेक बार बताती है । वह उसमें पुरुष समागम को लेकर एक भय सा पैदा कर देती है । ऐसा वह अपने स्वार्थ के लिए करती है । यही शीरीं मेहता बादमें प्रिया को भी अपने जालमें फँसाती है । मणि मधुकर के उपन्यास 'सफेद मेमने' में बन्नो की मामी बन्नो को सजातीय समागम की ओर प्रेरित करती है । एक बार इस प्रकार की प्रवृति में लिप्त होने के बाद इस प्रकार की स्त्रियों को सजातीय समागम ही अधिक आनंदप्रद लगता है । ऐसी स्त्रियाँ कई बार पुरुष समागम से दूर भागती हैं और शनैः शनैः उनमें एक दूसरे प्रकार का ठंडापन आ जाता है । 'मुझे चाँद चाहिए' में वर्षा वशिष्ठ और दिव्या कात्याल के बीच इस प्रकार के संबंधों के कुछ संकेत मिलते हैं ।

६:०४:०५ गुदामार्गीय मैथुन (anal-Coitus) :

स्त्री-पुरुष का मैथुन नैसर्गिक कहा जाएगा । जब दो पुरुषों के बीच मैथुनिक संबंध होते हैं और उसमें जब गुदामार्गीय मैथुन की प्रवृत्ति होती है तब उसे कामकुंठाजन्य विकृति ही कहा जाएगा । लखनवी सभ्यता में इसके कई उदाहरण मिलते हैं । वस्तुतः यह विकृति नवाबी सभ्यता की देन है । डॉ. राही मासूम रज़ा के उपन्यास 'आधागाँव' तथा 'दिल एक सादा कागज' में इसके कई उदाहरण मिलते हैं । स्त्री-पुरुष संबंधों में भी कई बार यह प्रवृत्ति देखी

जाती है । पुरुष और पुरुष के इस प्रकार के संबंधों के उदाहरण तो उपन्यासों में मिल जाते हैं परन्तु दूसरे प्रकार के संबंधों के उदाहरण अध्यावधि देखे नहीं गये हैं ।

६:०४:०६ हस्तमैथुन (Mastarbation) :

यद्यपि आधुनिक यौन-मनोवैज्ञानिक इसे विकृति नहीं मानते, उसे भयंकर और हानिकारक भी नहीं मानते, परन्तु इसे काम पूर्ति की एक अस्वाभाविक क्रिया तो माना ही जाएगा । यह कामकुंठा का परिणाम भी है और उसका कारक भी अर्थात् काम-कुंठित व्यक्ति में यह विकृति होती है । दूसरे इसके कारण काम-कुंठा भी पैदा होती है । शताब्दियों से संचित संस्कारों के कारण हस्तमैथुन से पीड़ित व्यक्ति एक प्रकार की हीनग्रंथि से पीड़ित रहता है और उसके कारण उसमें काम कुंठाएँ जनमती हैं । यह भी दो प्रकार का होता हैं - स्त्रियों में पाया जानेवाला और पुरुषोमें पाया जानेवाला । स्वाभाविक कामपूर्ति के अभाव में स्त्री इसका सहरा लेती है । उसी प्रकार पुरुष भी इसका सहारा लेता है । माँ-बाप के प्रेम से वंचित रहनेवाले बच्चों में यह विकृति प्रायः पायी जाती है । मन्नू भंडारी कृत 'आपका बंटी' में इसके कुछ संकेत मिलते हैं । 'अलग अलग वैतरणी' के गोपू और कल्पू में भी यह विकृति मिलती है । हृदयेश कृत 'एक कहानी अंतहीन' में गोविंदराम अपनी यौन क्षुधा की तृप्ति इसके द्वारा करता है । गुलशेर खान शानी के उपन्यास 'कालाजल' में रोशन की माँ जब रज्जू मियाँ के साथ दूसरा विवाह कर लेती है तब रोशन अपनी माँ से कटा-कटा-सा रहता है और फलतः उसमें यह आदत विकसित होती है ।

६:०४:०७ पशु मैथुन (Beastiality) :

मनुष्य का पशुओं के साथ जो मैथुन कर्म होता है उसे पशु-मैथुन (Beastiality) कहते हैं । हमारे यहाँ के पौराणिक साहित्य में कई ऐसे संदर्भ

मिलतें हैं जहाँ मनुष्येतर पशु-प्राणियों से मैथुनिक संबंध और उससे संतानोत्पत्ति की बात कही गई है । ग्रीक साहित्यमें भी एक दंत कथा मिलती है जिसमें लीड़ा एक हंस की सहायता से हेलन नामक सुंदर लड़की को जन्म देती है । वैसे शारीरिक दृष्टि से तो यह संभव नहीं लगता परन्तु मनुष्य का पशु के साथ का मैथुन संबंध अवश्य संभव है । गाँव में कई बार ऐसे किस्से देखने में आते हैं । जहाँ पुरुषों के गाय, भैंस, बकरी आदि से भी मैथुन कार्य संपादित होते हैं । मणि मधुकर के उपन्यास 'सफेद मेमने' में ढोरों का डॉक्टर भानमल एक भैंस के साथ संभोग करता है ऐसा दृश्य दिखाया गया है ।[३०] भले ही आज के यौन मनोवैज्ञानिक इन यौन विकृतियों को हानिकारक न मानते हों, परन्तु सामाजिक मर्यादाओं और संस्कारों के दबाव के कारण इस कर्म से व्यक्ति के व्यक्तित्व पर कुप्रभाव पड़ता है । इससे मनुष्य का व्यक्तित्व कुंठित हो सकता है और वह हीनताबोध का शिकार भी होता है । पशु-मैथुन में लिप्त व्यक्ति को यदि कोई और देख लेख लेता है तो उसकी समाजमें बदनामी होती है । गाँव में तो यह भी देखा गया है कि पशु-मैथुन के कारण कुछ लोगों के गंदे और अश्लील प्रकार के नामकरण भी हो जाते हैं । कुछ भी हो यह प्रवृत्ति कामकुंठा का परिणाम है, इतना तो असंदिग्धतया कहा जा सकता है ।

६:०४:०८ विपरीत वेश-परिधान (Transvitaism) :

काम-कुंठाओं के कारण कुछ लोगों में यह प्रवृत्ति विकसित होती है । जिसमें कोई पुरुष स्त्री के वेश को धारण करता है । कुछ दार्शनिकों का मानना है कि प्रत्येक पुरुष में नारी, प्रत्येक नारी में कुछ पुरुष के प्रतिशत होते हैं । जिन पुरुषो में स्त्रैण प्रतिशत अधिक होते हैं उनमें यह प्रवृत्ति पायी जाती है । ऐसा करने से उनमें यौन-उत्तेजना बढ़ जाती है । कई बार प्रेम-क्रीड़ाओं में विभिन्नता लाने के लिए भी ऐसा किया जाता है । परन्तु तब उसे कामकुंठा का

परिणाम नहीं माना जाएगा । कामकुंठा का परिणाम हो उसे तब माना जाएगा जब किसी व्यक्तिमें इसका आधिक्य पाया जाए या बिना उसके उसमें कामोत्तेजना का अभाव पाया जाए । हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में अभी तक ऐसा कोई उदाहरण देखने में नहीं आया है परन्तु संप्रति प्रदर्शित 'बवंडर' नामक फिल्म में एक पुलीस कर्मचारी में यह प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है ।

६:०४:०९ जातीय वृत्ति का आधिक्य (Erotomania) :

यह स्त्रियों में frigidity और पुरुषोमें impotence के विरोधी ध्रुव हैं । वैसे तो प्रत्येक वयस्क स्त्री-पुरुष में जातीय भावना होती ही है । परन्तु जब उसका अतिरेक हो जाता है तो उसे एक विकृति ही कहा जाएगा । ऐसे व्यक्ति को 'सेक्स मेनियाक' भी कहते हैं । स्त्री में यदि यह वृत्ति होती है तो उसे 'Nympho' कहा जाता है और पुरुष में यदि यह वृत्ति हो तो उसे 'Satyrisis' कहा जाता है । Nympho स्त्री की कामवासना एक दो पुरुषों से तृप्त नहीं होती। फलतः कामभावना की अतिशयता के कारण वह निरंतर नये शिकारों की खोजमें रहती है । रूस की रानी 'केथरीन' द्वितीय के प्रेमियों की संख्या कई थी । इस संदर्भ में कहा गया है - "Catherine II of Russia, and empress who lived in the middle of the eighteenth century. She was famous for her unsatisfiable appetite for sex and is said to have lovers by the score. It is possible she was merely constantly unsatisfied."[३१] हमारे यहाँ भी पुराणों में ययाति का उदाहरण मिलता है जो अपने बेटे यदु का जीवन माँग लेता है । 'किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई' की सेठानी नर्मदा, 'इमरतिया' की गौरी तथा 'सफेद मेमने' की सूरजा जाटणी में हमें जातीय प्रवृत्ति का आधिक्य मिलता है । यद्यपि तीनों में उसके कारण अलग-अलग हैं । नर्मदाबेन को पति के रुपमें एक नपुंसक पुरुष मिलता है । गौरी को बलात सधुआइन

बनाया गया है तो सूरजा जाटणी कई-कई दिनों तक अनके पुरुषों द्वारा बलात्कृत होती रहीं है । 'रेखा' उपन्यास की रेखा तथा 'मित्रो गरजानी' की मित्रो में भी इस प्रवृत्ति के संकेत मिलते हैं ।

६:०४:१० अश्लील साहित्य (erotics) का पठन-पाठन :

काम जनित कुंठाओं के कारण ही व्यक्ति अश्लील साहित्य के पठन-पाठन की ओर मुड़ता है । गंदी अश्लील तस्वीरें, गंदी अश्लील कहानियाँ तथा लतीफे इसके अंतर्गत आते हैं । ऐसा साहित्य यदि अपरिपक्व मस्तिष्क वाले किशोर किशोरियों के हाथों में पड़ जाय तो उनका मस्तिष्क विकृत और कुंठित हो सकता है । गुलशेर खान शानी के उपन्यास 'कालाजल' में बब्बन के पिता को ऐसी बाजारू पुस्तकों को पढ़ने का शौक है । बब्बन को अपने फुफेरी बहन सलमा आपा से बहुत आत्मीयता है । अतः उनके कहने पर बब्बन पिताजी के बक्से से कोई ऐसी ही किताब चुराकर सलमा आपा को देता है । इस किताब का ऐसा बुरा प्रभाव सलमा आपा पर पड़ता है कि वे मुग्धावस्था में ही शारीरिक संबंधो के लिए उत्सुक रहने लगती हैं और इसी उपक्रम में विवाह पूर्व गर्भवती होने के कारण शंकास्पद स्थितियों में उनकी मौत होती है ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि काम जनित कुंठाओं के कारण व्यक्ति में, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, कुछ काम ज़नित विकृतियाँ पैदा होती हैं और इन विकृतियाँ के कारण उस व्यक्ति का जीवन संतुलित नहीं रह पाता है ।

६:०५:०० निष्कर्ष :

अध्याय के समग्राकलन से निम्नलिखित निष्कर्षों तक सहजतया पहुँच सकते हैं :

(१) जातीगत कुंठा, अर्थगत कुंठा, परिवेशगत कुंठा की भाँति काम-भावना से जुड़ी हुई काम-कुंठाओं का भी अस्तित्व होता है । काम-कुंठाओं से परिचालित व्यक्ति साधारण (Normal) नहीं रह पाता है ।

(२) ये काम-कुंठाएँ सभी अवस्था के लोगों में पायी जाती हैं, जैसे युवावस्था के स्त्री पुरुषों में, पौढ़ अथवा वृद्धावस्था के स्त्री-पुरुषो में तथा शिशु अवस्था के बाल-बालिकाओं में ।

(३) कालाजल, एक कहानी अंतहीन, अलग अलग वैतरणी, सफेद मेमने, नदी फिर बह चली, आधागाँव, शहरमें घूमता आईना, बैसाखियोंवाली इमारत, तीसरा आदमी, मुक्तिपथ, इमरतिया, छायामत छूना मन, रेखा, किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई प्रभृति उपन्यासो में हमें ऐसे पात्र मिलते हैं जो किशोर तथा युवावस्था के हैं और उनमें कामकुंठाओं के कारण किसी-न-किसी प्रकार की विकृति पायी जाती है ।

(४) सलमाआपा, रोशनबेग (कालाजल); एक कहानी अंतहीन की नायिका, गोविंदराम (एक कहानी अंतहीन); पटनहिया भाभी (अलग अलग वैतरणी); डॉ. भानमल (सफेद मेमने); जगलाल (नदी फिर बह चली); सलीमपुर के जमींदार अशरफउल्लाखाँ, तक्कन चाचा (आधागाँव); बैसाखियोंवाली इमारत का अनाम नायक, मिस जयस्वाल (बैसाखियोंवाली इमारत); नरेश (तीसरा आदमी); सुनंदा (मुक्तिपथ); गौरी (इमरतिया); नायिका की बहन (छायामत छूना मन); रेखा (रेखा); सेठानी नर्मदाबेन (किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई); आदि युवावस्था के स्त्री-पुरुषो में नाना प्रकार की काम कुंठाएँ पायी जाती है ।

(५) उपेन्द्रनाथ अश्क कृत 'शहर में घूमता आईना' तथा शैलेश मटियानी कृत 'कबूतरखाना' जैसे उपन्यासों में तो ऐसे पात्रों की भरमार मिलती है ।

(६) प्रौढ़ावस्था अथवा वृद्धावस्था के स्त्री-पुरुषो में भी कईबार कामजनित कुंठाएँ दृष्टिगत होती हैं । शहरमें घूमता आईना, अलग अलग वैतरणी, सूखता हुआ तालाब, आधागाँव, दिल एक सादा कागज जैसे उपन्यासों में इस प्रकार के कई पात्र मिलतें हैं ।

(७) वातावरण, कुसंगत तथा परिस्थितियों के कारण कई बार शिशु अवस्था के बालक-बालिकाओं में भी कामजनित कुंठाओं का निर्माण होता है । अलग अलग वैतरणी, मुर्दाघर, आप का बंटी, सफेद मेमने, मछली मरी हुई, प्रभृति उपन्यासो में हमें कई ऐसे शिशुपात्र मिलते हैं जिनमें काम जनित कुंठाएँ दृष्टिगत होती हैं ।

(८) कामजनित कुंठाआ के बड़े दुष्परिणाम होते हैं । इन कुंठाओं से पीड़ित व्यक्ति किसी न किसी प्रकार की विकृति का शिकार होता है । काम-जनित कुंठाओं के कारण जातीय ठंडापन (frigidity), नपुंसकता (Impotence), पुरुष समलैंगिकता (Homosexuality), स्त्री समलैंगिकता (Lisbianaism), गुदामार्गीयमैथुन (anal-coitus), हस्तमैथुन (Master bation), पशुमैथुन (Beastiality), विपरीत वेश-परिधान (Transvitaism), जातीय वृत्ति का आधिक्य (Erotomania), अश्लील साहित्य का पठन और पाठन (erotics), आदि विभिन्न प्रकार की विकृतियाँ व्यक्ति जीवन में प्रविष्ट होती हैं ।

* * * *

संदर्भानुक्रम

१. नाच्यौ बहुत गोपाल : अमृतलाल नागर : पृष्ठ ८२

२. वही : अमृतलाल नागर : पृष्ठ ८७

३. कालाजल : गुलशेर खान शानी : पृष्ठ

४. दृष्टव्यं : साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास : पृष्ठ १४०

५. दृष्टव्य : आधागाँव : डॉ. राही मासूम रज़ा : पृष्ठ ९१

६. आलोचना : जनवरी - १९९६ : क्रमांक ३५ : पृष्ठ १६२

७. दृष्टव्य : शहरमें घूमता आईना : उपेन्द्रनाथ अश्क : पृष्ठ १५०/१५२/१५३/१५५

८. दृष्टव्य : बैसाखियों वाली इमारत : रमेश बक्षी : पृष्ठ - क्रमशः २, और २४

९. दृष्टव्य : वही : रमेश बक्षी : पृष्ठ १०३

१०. दृष्टव्य : वही : रमेश बक्षी : पृष्ठ १०८

११. दृष्टव्य : वही : रमेश बक्षी : पृष्ठ ६४

१२. दृष्टव्य : हिन्दी उपन्यासो का मनोवैज्ञानिक अध्ययन : डॉ. एम. वैंकटेश्वर : पृष्ठ ८३

१३. तीसरा आदमी : कमलेश्वर : पृष्ठ ५

१४. वही : कमलेश्वर : पृष्ठ ६९

१५. मुक्तिपथ : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ ३८६

१६. इमरतिया : नागार्जुन : पृष्ठ २७

१७. वही : नागार्जुन : पृष्ठ २२

१८. होरिजोन ऑफ मेरेज : पृष्ठ १४०

१९. रेखा : भगवती जरण वर्मा : पृष्ठ ३०८

२०. दृष्टव्य : आलोचना - जनवरी १९९६ : पृष्ठ १६२

२१. दृष्टव्य : शहर में घूमता आईना : उपेन्द्रनाथ : पृष्ठ ७२

२२. दृष्टव्य : वही : उपेन्द्रनाथ : पृष्ठ १९९

२३. दृष्टव्य : वही : उपेन्द्रनाथ : पृष्ठ ४५०-४५१

२४. दृष्टव्य : साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास : पृष्ठ ८०

२५. दृष्टव्य : वही : पृष्ठ ८०

२६. आधागाँव : पृष्ठ ९१

२७. दृष्टव्य : चिन्तनिका : डॉ. पारूकान्त देसाई : पृष्ठ ५९

२८. आप का बंटी : मन्नू भंडारी : पृष्ठ १३३

२९. दृष्टव्य : चिन्तनिका : डॉ. पारूकान्त देसाई : पृष्ठ ५७

३०. दृष्टव्य : सफेद मेमने : पृष्ठ ५०

३१. an ABZ of love : Inge and Sten Hegelar : Page 57